Toppersnotes
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

पेपर – II || भाग – II

भारतीय भूगोल
एवं
राजस्थान भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

भारतीय भूगोल

1. भारत की स्थिति व विस्तार 1
2. भारत के भौगोलिक भू-भाग 7
3. भारतीय मानसून 32
4. उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात 39
5. भारत का अपवाह तंत्र 41
6. भारत मे प्राकृतिक वनस्पति 52
7. जैव विविधता 57
8. भारत की मिट्टी/मृदा 62
9. जलवाय 70
10. वार्षिक वर्षा 82
11. भारत मे खनिजो का वितरण 84
12. भारत के प्रमुख उद्योग 90
13. परिवहन तंत्र 95
14. कृषि 105

राजस्थान भूगोल

1. राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति व विस्तार 108
2. राजस्थान के ऐतिहासिक व भौगोलिक स्थानो की वर्तमान स्थिति 115
3. राजस्थान के भौतिक प्रदेश व विभाग 118
4. राजस्थान की जलवाय 139
5. राजस्थान मे मृदा संसाधन 149
6. राजस्थान मे वन-संसाधन व वनस्पति 156
7. राजस्थान मे खनिज सम्पदा 165
8. ऊर्जा के स्त्रोत 177
9. राजस्थान मे पशुधन 186
10. राजस्थान मे कृषि 196

11.राजस्थान की जनसंख्या 204
12.राजस्थान मे वन्य जीव व इनका संरक्षण 213
13.राजस्थान की जलविद्युत परियोजनाए 233
14.राजस्थान गैस, परमाण व तरल ईंधन आधारित योजनाए 237

भारतीय भूगोल

भारतीय भूगोल
(Indian Geography)

भारत का विस्तार

- भारत का अंक्षाशीय तथा देशान्तरीय विस्तार लगभग 30° है परन्तु भारत में उत्तर से दक्षिण तक की दूरी, पूर्व से पश्चिम की दूरी से अधिक है क्योंकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढ़ने पर देशान्तर के बीच दूरी कम होती जाती है। परन्तु अक्षांशों के बीच दूरी समान रहती है।
- भारत का क्षैत्रफल = 3287263 किमी.^{2} = लगभग 32.8 लाख किमी.^{2}
- विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% भारत का क्षेत्रफल है।
- क्षैत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में 7th स्थान है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अधिकतम क्षैत्रफल वाले देश–

  I. **Russia**
  II. **Canada**
  III. **China**
  IV. **USA**
  V. **Brazil**
  VI. **Australia**
  VII. **India**
  VIII. **Argentina**
  IX. **Kazakhstan**
  X. **Algeria**

- भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 121 करोड है जो विश्व की जनसंख्या का 17.5% है।
- जनसंख्या के आधार पर विश्व में भारत का दूसरा स्थान है।

Impact of Latitude:-

- भारत का अंक्षाशीय विस्तार 30° होने के कारण भारत में जलवायु, मृदा तथा वनस्पति से संबंधित विविधता पाई जाती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

- कर्क रेखा भारत को दो प्रमुख भागों में बाँटती है- भारत का दक्षिणी भाग उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में तथा उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित है।
- फिर भी भारत में उष्ण कटिबन्धीय मानसून जलवायु पाई जाती है क्योंकि उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत साइबेरिया से जाने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है।
- कर्क रेखा भारत के निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है ।

(i). Gujarat
(ii). Rajasthan
(iii). Madhya Pradesh
(iv). Chhattisgarh
(v). Jharkhand
(vi). West Bengal
(vii). Tripura
(viii). Mizora

<u>Impact of Longitudinal Extension:-</u>

- भारत का देशान्तरीय विस्तार 30° होने के कारण भारत के सबसे पूर्वी तथा पश्चिमतम भाग के बीच 2 घंटे का अन्तर पाया जाता है।
- 82½° **E** देशान्तर को भारत की स्थानीय समय गणना के लिए एक मानक देशान्तर के रूप में चुना गया है।
- भारत का समय **GMT** से 5½ घंटे आगे है।
- 82½° **E** निम्नलिखित राज्यों से गुजरती हैः-
    - **Uttar Pradesh**
    - **Madhya Pradesh**
    - **Chhattisgarh**
    - **Odisha**
    - **Andhra Pradesh**
-

Q.1 क्या उत्तर-पूर्वी राज्यों को एक पृथक् समय दिया जाना चाहिए?

Ans. उत्तर-पूर्वी राज्यों की जनता की यह माँग रही है कि उन्हें पृथक समय दिया जाए क्योंकि भारत के समय से उनका समय आगे होने के कारण उनकी दिनचर्या पर नकारात्मक प्रभाव पडता है ।

पृथक समय के पक्ष में निम्नलिखित तर्क हैः-

(i). समय का उनकी जैविक घडी के अनुसार होना उन लोगों की कार्यक्षमता को बढाएगा।

(ii). इससे लगभग 2.3 अरब यूनिट बिजली की बचत होगी।

(iii). उत्तर-पूर्वी राज्यों की जैव विविधता के लिए यह सकारात्मक होगा।

(iv). यदि उनकी यह माँग मान ली जाए तो उत्तर-पूर्वी राज्यों का विश्वास केन्द्र सरकार में बढेगा।

(v). पहले भी उत्तर-पूर्वी राज्यों में चाय-बागानी समय था। उसी के अनुसार अब भी उनके लिए पृथक समय रखा जा सकता है।

पृथक समय के विपक्ष में तर्कः-

(i). पृथक समय से उत्तर-पूर्वी राज्यों में अलगाववादी भावना बढेगी।

(ii). भारत में अभी शिक्षा तथा जागरूकता कम होने के कारण अव्यवस्था की स्थिति बन सकती है। यदि समय में परिवर्तन किया गया।

(iii). परिवहन से संबंधित समस्या उत्पन्न हो सकती है।

(iv). विभिन्न कार्यस्थलों के बीच समय बिगड सकता है।

निष्कर्षः-

- हाल ही में गुवाहाटी कोर्ट का फैसला इस मुद्दे का उचित समाधान हो सकता है। गुवाहाटी न्यायालय के अनुसार उत्तर-पूर्वी राज्यों की पृथक् समय की माँग उचित है लेकिन उन्हें पृथक समय देने का यह उचित समय नहीं है। पृथक् समय के स्थान पर उत्तर-पूर्वी राज्यों में दिन के प्रकाश की बचत **(Day Light Saving)** की जा सकती है।
- 2007 में **National Institute of Advanced Studies** ने भारत के समय को आधा घंटा आगे करने का सुझाव था। अतः इस सुझाव पर अमल किया जा सकता है।

Border of India:-

1. स्थलीय सीमाः-

- भारत की स्थलीय सीमा लगभग 15200 किमी. (15106.7 किमी.) है।
- भारत की स्थलीय सीमा निम्न देशों को स्पर्श करती हैः-

(i). **Bangladesh = 4096.7 km**
(ii). **China = 3488 km**
(iii). **Pakistan = 3323 km**
(iv). **Nepal = 1751 km**
(v). **Myanmar = 1643 km**
(vi). **Bhutan = 699 km**
(vii). **Afghanistan = 106 km**

- भारत–पाकिस्तान सीमा रेखा = रेडक्लिफ रेखा
- भारत–चीन सीमा रेखा = मैकमोहन
- भारत–अफगानिस्तान सीमा रेखा = डूरन्ड रेखा

2. जलीय सीमा:–

- भारत की जलीय सीमा = 7516.6 किमी.
  Mainland = 5422.6 km & Island = 2094 km
- सर्वाधिक तटीय सीमा वाले राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश:–

Andaman & Nicobar
(i). **Gujarat**
(ii). **Andhra Pradesh**
(iii). **Tamilnadu**
(iv). **Maharashtra**
(v). **Kerala**
(vi). **Odisha**
(vii). **Karnataka**
(viii). **West Bengal**
(ix). **Lakshadweep**
(x). **Goa**
(xi). **Puducherry**

(xii). Daman & div

<u>तटवर्ती/सीमावर्ती सागरः-</u>

(i). सीमावर्ती सागर **(Territorial Sea)**

(ii). संलग्न सागर **(Contiguous Sea)**

(iii). अनन्य आर्थिक क्षेत्र **(Exclusive Economic Zone)**

1. <u>सीमावर्ती सागरः-</u>
   - यह क्षेत्र आधार रेखा से 12**nm** तक स्थित है।
   - इस क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है।
2. <u>संलग्न सागरः-</u>
   - यह क्षेत्र आधार रेखा से 24**nm** तक स्थित है।
   - इस क्षेत्र में भारत के पास वित्तीय अधिकार है।
   - यहाँ भारत सीमा शुल्क **(Custom Duty)** वसूल सकता है।
3. <u>अनन्य आर्थिक क्षेत्रः-</u>
   - यह क्षेत्र आधार रेखा से 200**nm** तक स्थित है।
   - इस क्षेत्र में भारत के पास आर्थिक अधिकार है तथा यहाँ भारत संसाधनों का दोहन, द्वीप निर्माण तथा अनुसंधान आदि कर सकता है।

<u>उच्च सागरः-</u> यहाँ सभी देशों का समान अधिकार होता है।

<u>तटवर्ती सीमा के लाभः-</u>

(i). तटवर्ती सीमा दक्षिण भारत में समकारी जलवायु **(Moderate Climate)** का निर्माण करती है।

(ii). तटवर्ती सीमा बन्दरगाहों के निर्माण के लिए उपयोगी है। इन बन्दरगाहों के माध्यम से आयात-निर्यात अर्थात् व्यापार किया जाता है।

(iii). तटवर्ती सीमा भारत को विभिन्न देशों से जोडती है।

(iv). पर्यटन की दृष्टि से भी यह उपयोगी होती है।

(v). महासागरीय संसाधनों तक तटवर्ती सीमा पहुँच बनाती है।

(vi). सुरक्षा की दृष्टि से भी तटवर्ती सीमा महत्वपूर्ण है।

<u>तटवर्ती सीमा के नुकसान:-</u>

(i). सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पडता है।

(ii). समुद्री लुटेरों, तस्करी आदि का भी डर बना रहता है।

(iii). तटवर्ती सीमा के रखरखाव एवं सुरक्षा के लिए अतिरिक्त व्यय करना पडता है।

<u>निष्कर्ष:-</u> तटवर्ती सीमा के नकारात्मक प्रभाव होने के बावजूद यह भारत के लिए लाभकारी है।

<u>भारतीय उपमहाद्वीप (Indian Subcontinent):-</u>

- उपमहाद्वीपीय उस भाग को कहा जाता है जो महाद्वीप में अपनी एक पृथक पहचान रखता हो।
- भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण की दृष्टि से भारत एशिया के अन्य देशों से पृथक पहचान रखता है।
- भारत के उत्तरी भाग में पर्वत स्थित हैं जैसे - हिन्दुकुश, सुलेमान, हिमालय, पूर्वांचल तथा पूर्व में अराकनयोमा जो भारत को एशिया के मुख्य भूभाग से पृथक करते हैं।
- भारत के दक्षिणी भाग में महासागरीय क्षेत्र स्थित हैं जो भारत तथा पडौसी देशों को पृथक् पहचान दिलाता है।
- भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित देश सम्मिलित हैं:-
  - **INDIA**
  - **Pakistan**
  - **Afghanistan**
  - **Nepal**
  - **Bhutan**
  - **Bangladesh**
  - **Shri Lanka**
  - **Maldive**

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भारत के भौगोलिक भू-भाग

(Physiography Devision of India)

<u>भारत के भौगोलिक भू-भागः-</u>

(i). Himalayan Mountain Region
(ii). Northern Plain Region
(iii). Peninsula Plateau Region
(iv). Coastal Plain Region
(v). Island Groups Region

1. <u>हिमालय पर्वतीय प्रदेशः-</u>

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए है।
- क्योंकि इस पर्वत तंत्र का निर्माण टरसरी काल में हुआ है, इसलिए इसे 'टरसरी पर्वत तंत्र' भी कहा जाता है ।

Tertiary Period (टरसरी काल) = (70 मिलियन वर्ष-11 मिलियन वर्ष पूर्व तक)

- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है।
- भारत की सबसे प्रमुख नदियों का उद्गम इसी पर्वत पर स्थित हिमनदों से होता है।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता हैः-

A. <u>Trans Himalyan:-</u> हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू-कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है।
- मुख्य हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती हैः-

(a). <u>काराकोरम श्रेणीः-</u>

- ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी।

- ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है। (8611 किमी.)
- यह श्रेणी अपने अल्पाइन हिमनदों के लिए विख्यात है:-

(i). बतुरा
(ii). हिस्पर
(iii). बियाको
(iv). बालतोरो
(v). सियाचिन

- 'सियाचिन हिमनद' नुबरा घाटी में स्थित है तथा इस हिमनद के पिघलने से नुबरा नदी का उद्गम होता है, जो कि सिन्धु की सहायक नदी है।

(b). <u>लद्दाख श्रेणी:-</u>

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पवत' के नाम से जाना जाता है।
- तिब्बत में इस श्रेणी के दक्षिण में 'मानसरोवर झील' स्थित है।
- 'रकापोशी चोटी' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।

(c). <u>जास्कर श्रेणी:-</u>

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है।

Note:- <u>लद्दाख पठार:-</u>

- काराकोरम श्रेणी तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य स्थित अन्तः पर्वतीय पठार।
- इस पठार की ऊँचाई लगभग 4800 मीटर है, तथा यह भारत का सबसे ऊँचा पठार है।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है।
- इस पठार पर बहुत सी खारे पानी की झील पाई जाती है।

B. <u>Main Himalya:-</u>

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है।
- इस भाग के दोनों ओर अक्षसंघीय मोड **(Systaxial Bend)** पाया जाता है।
- इस भाग भाग की चौडाई पश्चिमी भाग में अधिक तथा पूर्वी भाग में कम है।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- इस भाग में तीन प्रमुख श्रेणियाँ हैः-

(i). वृहत् हिमालय **(Great Himalaya)**
(ii). मध्य हिमालय **(Middle Himalaya)**
(iii). शिवालिक **(Shivalik)**

(a). <u>वृहत् हिमालय **(Great Himalaya):-**</u>

- यह श्रेणी नंगा पर्वत से नामचा बरवा के बीच स्थित है।
- यह 2400 किमी. की दूरी से विस्तृत है तथा इसकी औसत चौडाई 25 किमी. एंव औसत ऊँचाई 6100 मी. है।
- ऊँचाई अधिक होने के कारण यह पर्वत वर्ष भर बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री भी कहा जाता है।
- यह विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल-चीन सीमा पर स्थित है।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है। (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है। **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान **etc.**
- इस श्रेणी में बहुत से दर्रे है जिन्हें स्थानीय भाषा में 'ला' कहा जाता है।
- वृहत् हिमालय के प्रमुख दर्रेः-
  - **Burzila**
  - **Zajila**
  - **Baralachha**
  - **Shipkila**
  - **Mana**

- **Niti**
- **Lipu Lekh**
- **Nathula**
- **Jaleepla**
- **Bomdil**

(i). बुर्जिला दर्राः–

* यह श्रीनगर को **POK** से जोड़ता है।
* इस दर्रे के माध्यम से घुसपैठ गतिविधियाँ होती है।

(ii). जोजिला दर्राः–

* यह दर्रा श्रीनगर को लेह से जोड़ता है।
* इस दर्रे से **NH-1D** गुजरता है।

(iii). बारालच्छा दर्राः– यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को लेह से जोड़ता है।

(iv). शिपकिला दर्राः–

* यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से जोड़ता है।
* इस दर्रे का निर्माण सतलज नदी द्वारा किया गया है।
* इसी दर्रे के माध्यम से सतलज नदी भारत में प्रवेश करती है।
* इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है।

(v). मानाः– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोड़ता है।

(vi). नीतिः– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोड़ता है।

(vii). लिपुलेख दर्राः–

* यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोड़ता है।
* इस दर्रे के माध्यम से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है। अतः इसे 'मानसरोवर का द्वार' भी कहा जाता है।
* इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है।

(viii). नाथूला दर्राः–

* यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोड़ता है।
* इस दर्रे से प्राचीन रेशम मार्ग गुजरता था।
* इस दर्रे का उपयोग चीन के साथ व्यापार एवं कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए किया जाता है।

* मानसरोवर की यात्रा इस दर्रे के माध्यम से अधिक सुगम होती है।

(ix). जलीपला दर्राः– यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है।

(x). बोमडिला दर्राः– यह दर्रा अरूणाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है।

(b). मध्य हिमालय **(Middle Himalaya):-**

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते है।
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है।
- इस श्रेणी की ऊँचाई लगभग 3700–4500 मी. के बीच पाई जाती है।
- इस श्रेणी के विभिन्न स्थानीय नाम हैः–
  (i). J & K – Pir Panjal
  (ii). Himachal Pradesh – Dhauladhar
  (iii). Uttarakhand - Mussoorie/Nag Tibba
  (iv). Nepal – Mahabharat
  (v). Sikkim – Dokya
  (vi). Bhutan – Black Mountain
- मध्य हिमालय तथा वृहत् हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित हैः–
  (i). कश्मीर घाटी = वृहत् हिमालय – पीर पंजाल
  (ii). कुल्लू घाटी = वृहत् हिमालय – धौलाधर
  (iii). कांगडा घाटी **(HP)** = वृहत् हिमालय – मसूरी
  (iv). काठमांडू घाटी = वृहत् हिमालय – महाभारत
- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते है, जिन्हें जम्मू कश्मीर में 'मर्ग' तथा उत्तराखण्ड में 'बुग्याल, पयाला' कहा जाता है।
- शीत ऋतु के दौरान यह श्रेणी बर्फ से ढक जाती है।
- इस श्रेणी पर स्थित घास के मैदानों का उपयोग स्थानीय समुदाय अपने पशुओं को चराने के लिए करते है।
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते है। **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी **etc.**
- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते है।

e.g.1 <u>पीरपंजाल दर्राः–</u> यह दर्रा श्रीनगर को **POK** से जोडता है।

e.g.2 <u>बनिहाल दर्राः–</u>

* यह दर्रा श्रीनगर को जम्मू से जोडता है।
* इस दर्रे से **NH1A** गुजरता है।
* इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित है।

<u>ऋतु प्रवास **(Transhumance):-**</u>

- ऋतुओं में होने वाले परिवर्तन के साथ जब स्थानीय समुदाय अपने पशुओं के साथ चारे तथा जल की तलाश/खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पलायन करते हैं, उसे ऋतु प्रवास कहा जाता है।
- जम्मू-कश्मीर में गुर्जर तथा बकरवाल समुदाय ऋतु प्रवास करते हैं।
- ग्रीष्म ऋतु के दौरान ये पर्वतों की ओर तथा शीत ऋतु में घाटी क्षेत्र की ओर पलायन करते हैं।

<u>करेवा **(Karewa):-**</u>

- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के कारण कश्मीर घाटी क्षेत्र में अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से भर गई तथा इन्हीं अवसादों को करेवा कहते हैं।
- करेवा कश्मीर घाटी क्षेत्र में पाए जाने वाले उपजाऊ हिमनद, नदी एवं झील के अवसाद **(Glacial, Riverine & Lacustrine)** है। इस अवसादों का उपयोग केसर व चावल की खेती के लिए किया जाता है।

(c). <u>शिवालिक **(Shivalik):-**</u>

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 500-1500 मी. के बीच पाई जाती है।
- इसकी चौडाई 10-50 किमी. है।
- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता हैः–

  (i). J & K – Jammu Hills

  (ii). Uttarakhand – Dudwa/Dhang (दूद्वा/धांग)

  (iii). Nepal – Churiaghat (चूडियाघाट)

  (iv). A.P. – Dafla (दाफला)

  Miri (मिरी)

  Abhor (अबोर)

Mishmi (मिश्मी)

- शिवालिक श्रेणी के निर्माण के दौरान मध्य हिमालय तथा शिवालिक श्रेणी के बीच अस्थाई झीलों का निर्माण हुआ था।
- यह झीलें कालान्तर में अवसादों से भर गईं जिससे समतल घाटियों का निर्माण हुआ।
- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में 'दून' तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में 'द्वार' कहते हैं। **e.g.-** देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार **etc.**
- इन घाटियों का उपयोग चावल की खेती के लिए किया जाता है।

चोस (Chos):-

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहते हैं।
- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती हैं।

पूर्वांचल (Purvanchal):-

- उत्तर-पूर्वी राज्यों में उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत पहाड़ियों को पूर्वांचल कहते हैं।
- पूर्वांचल का निर्माण इण्डो-ऑस्ट्रेलियन तथा बर्मा प्लेट के अभिसरण से हुआ है।
- यह बालू पत्थर से निर्मित पहाड़ियाँ हैं।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा यहाँ भारी वर्षा प्राप्त होती है अतः यहाँ बहुत अधिक जैव-विविधता पाई जाती है।
- यह विश्व के 36 **Hotspots** में सम्मिलित हैं।
- नागा पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी सरामती है।
- मिजो पहाड़ियों को लुसाई पहाड़ियाँ भी कहते हैं।
- मिजो पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी ब्लू माउण्टेन है।
- बराइल श्रेणी नागा पहाड़ियों एवं मणिपुर पहाड़ियों को अलग करती है।

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का प्रादेशिक विभाजनः-

(a). कश्मीर/पंजाब हिमालय (Kashmir/Punjab Himalaya):-

- हिमालय का यह भाग सिंधु तथा सतलज नदी के बीच स्थित है।
- यह लगभग 560 किमी. की दूरी में विस्तृत है।

- इस भाग में जास्कर, पीरपंजाल श्रेणी एवं जम्मू पहाडियाँ स्थित हैं।
- इस भाग में हिमालय की चौडाई सर्वाधिक पाई जाती है। जो लगभग 250-400 किमी. के बीच पाई जाती है।
- यहाँ हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से बढने लगती है।

(b). कुमायूँ हिमालय **(Kumao Himalaya):-**

- हिमालय का यह भाग सतलज से काली नदी के बीच स्थित है।
- यह 320 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- यह भाग मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में स्थित है।
- यहाँ कुछ प्रमुख चोटियाँ स्थित है। **e.g.-** नंदा देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, कामेट, त्रिशुल

(c). नेपाल हिमालय **(Nepal Himalaya):-**

- यह भाग काली तथा तिस्ता नदी के बीच स्थित है।
- यह भाग 800 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई सर्वाधिक पाई जाती है।
- यहाँ कई प्रमुख ऊँची चोटियाँ पाई जाती है। **e.g.-** माउण्ट एवरेस्ट, कंचनजंगा (8598 मी.)
- यहाँ हिमालय की चौडाई अत्यधिक कम हो जाती है।

(d). असम हिमालय **(Assam Himalaya):-**

- यह भाग तिस्ता से दिहांग नदी के बीच स्थित है।
- यह 720 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- यहाँ हिमालय की चौडाई सबसे कम हो जाती है जो लगभग 150 किमी. हो जाती है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से कम होने लगती है।

हिमालय का महत्वः-

(i). हिमालय पर्वत भारत को प्राकृतिक सीमा प्रदान करता है जिसके कारण भारत को एक उपमहाद्वीप की संज्ञा प्राप्त होती है।

(ii). भारत की जलवायु पर भी हिमालय पर्वत का प्रभाव रहता है। हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है। यह मानसून पवनों को भारत में वर्षा करने के लिए बाध्य करते है।

(iii). हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पति पाई जाती है। यहाँ बहुत अधिक जैव विविधता पाई जाती है।